Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
https://www.srjis.com/issues_data/224
Peer Reviewed, Refereed & Indexed Journal, Nov-Dec, 2023, Vol- 12/80
https://doi.org/10.5281/zenodo.10460990

उच्च शिक्षा संस्था में शांति आधारित शिक्षा की उपयुक्तता

डॉ . मनोज बोराटे
शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय□मासवड पुणे .

प्रस्तावना ः मानव ने अपनी बुध्दि के आधार पर हर एक क्षेत्र में प्रगती की है । तकनीक के आधार पर मानव ने आज अनेकों क्षेत्रों में अपना रूदबा जमा लिया है । लेकिन आज देश के सामने अनेकों समस्याएँ खडी है । आजकल अखबार पढने के लिए खोलते ही समाज में चल रहे दहशतवाद□अराजकता□अस्थैर्य□ हिंसाचार□अत्याचार□खून□दंगेफसाद आदी समस्याओं से देश तथा समाज झुंज रहा है । ऐसी स्थिती से ही समाज में विघातक शक्ती निर्माण होती है । समाज में चल रहे इस प्रकार से जब शांत बैठके सोचे तो पता चलता है की पाठशाला हो या उच्च शिक्षा मे विश्वविद्यालय की शिक्षा हो यहा तो हर बच्चें को अच्छे संस्कार किये जाते है । तो फिर ऐसा क्यो होता है । तो उसका जवाब हमें मिलता है कि यह मानव की मूल प्रवृत्ती ही है । मानव का लालच□स्पर्धा□द्वेष्व्यास तथा झुठी प्रतिष्ठा के लिए मानव अस्थिर है । और इससे समाज और देश अस्थिर है । ऐसा समाज और देश अच्छी तरह से प्रगती नहीं कर सकता इसलिए 1918 में 'जागतिक शांति' यह विचार प्रवाह आगे आया लेकिन इसका परिणाम कुछ नही देखने को मिला । देश में दुसरे महायुध्द में अनेक लोग मारे गये इसमें सिर्फ जिवित हानी नही हुई अपितु आर्थिक□औद्योगिक□सामाजिक हानी भी हुई । इससे जागतिक अशांतता निर्माण हुई । इसी पार्श्वभूमिपर सन 1945 में युनो की स्थापना हुई इसका मुख्य उद्देश राष्ट्र राष्ट्रों के मतभेद दुर करके शांतता प्रस्थापित करना । आगे युनोस्को की स्थापना हुई । सन 1980 में स्विडन में शांतता के लिए शिक्षा यह कार्य□म शुरू हुआ यहॉ से ही जपान□जर्मनी□आि□का इन देशो में शांति शिक्षा का उप□म शुरू हुआ ।

शांति शिक्षा की सैध्दांतिक पार्श्वभूमि ः शांति शिक्षा के बारे में अनेक दार्शनीक तथा विदुषीयों ने शिक्षा तज्ज्ञों ने तथा सामाजिक संस्था इन्होने अपने विचार तथा योगदान दिया हुआ है । आगे की सारणी से हम शांति शिक्षा के बारे में सैध्दांतिक पार्श्वभूमि जानेगें । सारणी से शांति शिक्षा के बारे में जो विचार बताऐ है । वह आज की वर्तमान स्थिती में हमे बहुत ही उपयोगि है ।

सारणी □. 1: शांति शिक्षा के बारे में दार्शनीकों के विचार

अ . □.	दार्शनीक	दार्शनीकों के विचार
1	गौतम बुध्द छटा शतक	जब हम अपने मन से □ध जैसी नकारात्मक भावनाओं को त्याग दे और करूणा जैसी सकारात्मक भावनाएँ पैदा करें तभी शांति मिल सकती है । इन्होने मानव समाज□मानवश्रेष्ठता आंतरिक शांति के लिए वास्तविक स्त्रोत को अपनाने कहा है ।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2	भगवान महाविर	धर्म सत्य अहिंसा ब्रम्हचर्य और अपरिग्रह क्षमा त्याग संयम प्रेम करूणा शील और सदाचार इन गुणोंको महत्व दिया है । अहिंसा ही शांति प्रदान कर सकती है ।
3	रविंद्रनाथ टागोर 1831¹1941	इन्होने विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना की विश्वशांति की संकल्पना बताई और कार्य किया ।
4	झाकिर हुसेन 1897¹1969	सेवा त्याग मानवता विशालता निस्वार्थी वृत्ती आदी गुणों को महत्त्व दिया है । और सामाजिक मूल्यों को महत्त्व दिया है ।
5	प्रजापिता ब्रम्हाकुमारी विश्वविद्यालय	शांति की शिक्षा देने के लिए इस विश्वविद्यालय की निर्मीती हुई है ।
6	युनिस्को 1945	शांति न्याय और सशक्त संस्थाएँ यह एक उद्देश रखा है ।
7	21 सितंबर	जागतिक शांतता दिन मनाया जाता है ।
8	एनसीएफ 2005	शांतता के लिए खुदके साथ औरो सें सुसंवाद करने के लिए मुल्ये दृष्टीकोन कौशल्ये विकसित करने को महत्त्व दिया है ।
9	एनईपी 2020	उच्च शिक्षा में एकरूपता और गुणवत्ता को बढावा दिया है ।

शांति शिक्षा की संज्ञा ः अब हम शांति शिक्षा की संज्ञा देखेगें आगे कुछ तज्ज्ञोंने की संज्ञा बताई गयी है ।

मर्सी अब्राहम - " शांति शिक्षा शांतिप्रिय लोगों के लिए शिक्षा है, जो इस पृथ्वी पर शांति कायम करने के योग्य होंगे । यह विशेषत भावात्मक शिक्षा है । यह धार्मिक शिक्षा है साथ ही यह स्वय में शिक्षा है ।"

डेव्हीड ॲडम्स - " सहिष्णूता प्रजातंत्र पारदर्शकता अहिंसा और संवाद विश्वास स्त्री पुरूष समानता आर्थिक और सामाजिक न्याय इन सबसे मिलकर शांतता प्रस्तापित होती है ।"

शांति शिक्षा के उद्देश ः शांति शिक्षा के लिए निचे उद्देश बताए गये है ।

1 छात्रों में एकात्मता सहकार्य मानवी हक्क की शिक्षा आदि के बारे में संस्कार करके शांतता पुर्ण जिवन जीने के लिए प्रवृत्त करना ।

2 छात्रों में सह अस्तित्त्व की भावना का विकास करना ।

3 छात्रों को धार्मिक सहिष्णूता अन्य प्रजातियों का आदर तथा धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों को आदर की दृष्टि से देखने के योग्य बनाना ।

4 छात्रों में शांति के आध्यात्मिक मुल्य को विकसित करना जिससे उनमें आन्तरिक शांति या मन की शांति प्राप्त हो सके ।

5 शांति प्रिय मानव के सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना ।

शांति शिक्षा की आवश्यकता ः शांति शिक्षा की आवश्यकता क्यों है यह निचे बताया गया है ।

1 शांति शिक्षा से कम से कम जरूरतो से जीने के लिए सिखाने के लिए आवश्यकता है ।

2 स्थानिक जगह का हिंसाचार रोखने के लिए आवश्यकता है ।

3 प्रजातंत्र के मुल्यको विकसित करने के लिए आवश्यकता है ।

4 छात्रों का नैतिक विकास करने के लिए आवश्यकता है ।

5 छात्रों को औरो की संस्कृतिका आदर करने के लिए सिखाने के लिए आवश्यकता है ।

शांति शिक्षा में अध्यापक की भूमिका ः अध्यापक प्रशिक्षण में शांति शिक्षा पर कार्य□मों का उद्‌बोधन होना चाहिए । अध्यापक का व्यक्तिमत्त्व वस्तुनिष्ठ होना चाहिए जो अच्छा है उसका आदर करना चाहिए । अध्यापक ने अपने आपसे सुसंवाद करके शांति शिक्षा की उपयोगिता को समझनेवाली बाते करनी चाहिए । मौन से शांतता बनी रहती है ऐसे संस्कार करके अपने अध्यापन के साथ साथ खेल कुद□कथा बताना□ स्नेहसंम्मेलन आदि कार्य□मों से शांति का महत्त्व बताना चाहिए । समानता के तत्वसे भरे मूल्य को अपनाते हुए स्वयं का मूल्यमापन करते रहना चाहिए । सारांश में हम कह सकते है की समाज की राष्ट्र की तथा देश की प्रगती शांति शिक्षा के अलावा नही हो सकती है । अध्यापकने शांति शिक्षा के अच्छे संस्कार करके संस्कारक्षम समाज की निर्मीती करने का निरंतर प्रयास करना चाहिए ।

शांति शिक्षा में विश्वविद्यालयों की भूमिका ः उच्च शिक्षा संस्थानों को इस बात पर विचार करना चाहिए की वे समाज में असमानताओं□हताशा□हिंसा को कम करने के लिए कैसे स□य रूप से योगदान दे सकते है । इस बात से शुरूआत करते हुए की वे व्यक्तिगत और सामाजिक लचीलापन□संघर्ष परिवर्तन में योगदान करने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण को बेहतर तरीके कैसे प्रदान कर सकते है । विकास और सामाजिक रूप से सिर्फ शांति मिलती रहेगी । उच्च शिक्षा संस्थान अभी भी सामाजिक और राजनीतिक विज्ञान के भीतर शांति और संघर्ष के अध्ययन को एक विशिष्ट के रूप में मानते है । सभी विषयों उद्योगों और शिक्षा के स्तर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शांति शिक्षा में भाग लेते है ।

समारोप ः मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य शांति प्राप्ति है । मानव की मुलभूत जरूरते तो पुरी होती ही है । इस जरूरत के साथ साथ अब मनोविज्ञान में मन की शांति को भी बडा महत्त्व दिया है । शांति शिक्षा वर्तमान समय में सबसे महत्त्वपुर्ण जरूरत मानी गई है । प्रस्तुत लेख में शांति शिक्षा को संज्ञा□उद्देश□आवश्यकता तथा अध्यापक की भूमिका बताई है । अगर सभीने इस शिक्षा को प्रेमपुर्वक आत्मसात किया तो हमें अच्छे बदल देखने को मिलेंगे ।

संदर्भ

अरूण सांगोलकर (2010)□नवीन जागतिक समाजातील शिक्षणाचे विचार प्रवाह नाशिकः इनसाईट पब्लिकेशन .

अरविंद दुनाखे (1998)□प्रगत शैक्षणिक तत्वज्ञान पुणेः नुतन प्रकाशन .

शशिकांत अन्नदाते (2016)□जिल्हा शिक्षण व प्रशिक्षण संस्था पुणेः के सागर प्रकाशन .

शांति शिक्षा □उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय .

https://targetnotes.com

https://www.peace-ed-campaign.org/hi/higher-edu

Cite Your Article as:

Dr. Manoj Kanta Borate. (2024). UCCHA SHIKSHA MAIN SHANTI ADHARIT SHIKSHA KI UPYUKATATA. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 12(80), 23–25. https://doi.org/10.5281/zenodo.10460990